भूमण्डलीकरण, सूचना क्रांति और कुरमी/महतो महिलाओं पर इसका प्रभाव

ममता कुमारी, शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।
डा. सुरेन्द्र पांडे, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोध सार

सूचना क्रांति के विकास ने भारत को एक नये डिजिटल युग में प्रवेष करा दिया है। इसने मनुश्य के लिए अवसरों के नये द्वार खोल दिये हैं, जिसकी बदौलत ज्ञान अर्थव्यवस्था के तहत व्यक्ति समृद्धि और धनोपार्जन कर सकता है। नयी सहस्राब्दि ने दुनिया भर में ज्ञान क्रांति के जरिये अंतरनिर्भरता का बोध बढ़ाया है जिससे भूमंडलीय अंतरसंवाद व्यापक, सघन,त्वरित तथा प्रभावी हुआ हैं। इससे वैष्विक षक्ति की संरचना में व्यापक परिवर्तन आया है। विष्व बैंक की 1999 में जारी की गई रिपोर्ट से भी इस बात की पुश्टि होती है कि अर्थव्यवस्थाओं का निर्माण केवल भौतिक पूंजी और मानव कौषल इकटठा कर लेने भर से नहीं होता, बल्कि सूचना, अधिगम तथा स्वीकरण की बुनियाद पर होता है। प्रौद्योगिकी विकास की केंद्रीय वस्तु ज्ञान है। विकास की षुरूआत करने और उसकी निरंतरता बनाए रखने के लिए तकनीकि ज्ञान, गुणवता का ज्ञान, विशयवस्तु का ज्ञान, अधिगम हासिल करने के तरीके का ज्ञान तथा इसके सदुपयोग का ज्ञान जैसे विभिन्न रूपों के ज्ञान को समिन्वत किया जा रहा है, परन्तु ज्ञान निरपेक्ष नहीं होता बल्कि इसके सामाजिक यर्थाथ भी होते हैं, जिसमें प्रायः निर्धनों और महिलाओं के पारंपरिक ज्ञान की उपेक्षा कर दी जाती है। भूमण्डलीकरण के कारणा आई सूचना क्रांति से पिछड़ी जाति के परिवारों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर जहां एंक ओर सकारात्मक प्रभाव पडा है तो वहीं दूसारी ओर इसका नकारात्मक प्रभाव एवं इनमें सामाजिक विघटन भी देखने को मिलता है। सकारात्मक प्रभाव के कारण पिछड़ी जाति समाजों में सामाजिक एवं आर्थिक विकास की गति तीव्र हुई है, वहीं नकारात्मक प्रभाव के कारण इनके समाज कई समस्या उत्पन्न हो गई है।

विषय संकेत : *कुरमी/महतो महिलाएं, पिछड़ी जाति, भूण्मडलीकरण, सूचना क्रांति, वैज्ञानिक तकनीक*

परिचय

परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले इस सूचना युग को संचालित करने वाली षक्तियों में दुनियाभर की अर्थव्यवस्थाओं के भूमंडलीकरण के कारण सभी स्तरों पर प्रतिस्पर्धा में व्यापक वृद्धि, प्रौद्योगिकी, खासकर नेट और दूरसंचार प्रौद्योगिकी में तीव्र परिवर्तन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शोध कार्य में निवेष में रूची, कौषल परिवर्द्धन की मांग, बौद्धिक संपदा अधिकारों के संरक्षण को लेकर बढ़ती चिंता, ज्ञान आधारित व्यापार का विकास, सहभागी कार्य संस्कृति के प्रति प्रतिबद्धता में वास्तविक वृद्धि और नेटवक्रिंग नीतियों में तीव्र प्रगति जैसे कारक इसके मुख्य वाहक हैं।

विगत पांच दषकों में एषिया के जिन अग्रणी देषों में ज्ञानार्जन तथा ज्ञान सृजन में निवेष किया है उन्होंने अन्य देषों के मुकाबले तीव्र प्रगति की, उनके अनुभवों से यह सीख अन्य देषों को मिली की ज्ञान सृजन अर्जन और इसके प्रयोग की वर्त्तमान विकास में कितनी उपयोगिता है? इस प्रक्रिया में पहला कदम आंकड़ों तथा सूचना तक पहुंचना है। एक बार लोगों को आंकड़े और सूचनाएं उपलब्ध हो जाएं तो लोग उन्हें अर्जित करेंगे, उनका अपने निजी अनुभवों के साथ संयोजन एक अर्थपूर्ण स्वरूप प्रदान करेंगे। आंकड़ों का संसाधन स्रोत की निकटता, उसकी विष्वसनीयता, संचार तंत्र के साथ–साथ इस आस्था पर निर्भर करता है कि उक्त सूचना उनके लिए उपयोगी होगी, सूचना के संयोजन के लिये लोगों के पास कुछ विषेश कौषल होना चाहिए। संयोजित सूचना को ज्ञान के तौर प्रसारित किया जाता है, ताकि सामाजिक उददेष्यों हेतु योजना बना कर उन्हें कार्यान्वित किया जा सके।

सकारात्मक प्रभाव

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के अभिनव उपयोग से उपयोगी सूचना सुदूरवर्ती गांवों में रहने वाले लोगों तक पहुंचती है, इससे न केवल उनकी जागरूकता में इजाफा होता है, बल्कि उनकी अपेक्षाएं भी बढ़ती हैं। ज्ञान कल्याण का आधार होता है, भविश्य में आर्थिक विकास का मुख्य कारक उत्पादकता वृद्धि नहीं, बल्कि नवाचार होगा। नवाचारी ढंग से प्रौद्योगिकीयां तथा प्रबंधन प्रणालियां ज्ञान अर्थव्यवस्था का मजबूत आधार बनेंगी। सुचना तथा संचार प्रौद्योगिकी के द्वारा अनेक प्रौद्योगिकियों को आपस में जोड़कर ज्ञान–प्रक्षेपित अर्थव्यवस्था तैयार की जा सकती है।

देष की ज्ञान अर्थव्यवस्था का निर्माण संस्थान, प्रणालियां और संस्कृति करती है। ज्ञान अर्थव्यवस्था बुनियादी ढांचा, संसाधन तथा मानव क्षमता का संसाधन कर उनसे रोजगार सृजन, आर्थिक विकास, उच्च उत्पादकता, पारदर्षिता, जवाबदेही तथा समृद्धी जैसे परिणाम हासिल करती है। ज्ञान सृजन और संरक्षण, मानव विकास तथा मुल्यवर्द्धन रूपी तीन वृत ज्ञान अर्थव्यवस्थाओं में विकास के तीनों स्तंभों का आधार बनते हैं।

कम्प्यूटर के अधिकाधिक प्रयोग होने के बाद समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। कहा जाता है कि पूरे विष्व में तीन बार महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिसमें पहली बार पहिये के निर्माण के कारण, दूसरी बार औद्योगिक क्रांति के कारण व तीसरी बार सूचना क्रांति के कारण पूरे विष्व में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं, आज समाजषास्त्री वर्त्तमान समाज को सूचना समाज के नाम से संबोधित करते हैं। तीव्र गति के माध्यमों ने दुनिया को छोटा बना दिया है, इसी कारण मैकलुहान ने इस विष्व को एक वैष्विक गांव की संज्ञा दी है।

इस प्रकार टेलीफोन, रेडियो, सिनेमा, टेलिविजन, कम्प्यूटर, माइक्रो विद्युत उपकरण, और लेसर माध्यमों का धीरे –धीरे विकास हुआ, इसका प्रभाव सम्पूर्ण समाज पर पड़ा। वर्त्तमान में सूचना

क्रांति को गति प्रदान करने एवं प्रतिदिन नया रूप धारण करने में प्रौद्योगिकी विकास की भूमिका निर्विवाद रूप से सर्वोपरि है। प्रौद्योगिकी विकास के ही कारण वर्त्तमान समय में मानव मस्तिश्क के बाहर सूचना का विभिन्न रूपों में संसाधन, संप्रेशण, अधिग्रहण एवं पुर्नप्राप्ति आदि कार्यों का दफ्रत गति से त्रुटिरहीत एवं कुषलता पूर्वक संपादन होता है, यदि वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में हम संचार प्रक्रिया के लिए प्रौद्योगिकी की आवष्यक्ता की तुलना को मानव के फेफड़ों व वृक्क के रूप में की जाए तो कोई अतिष्योक्ति नहीं होगी। इलेक्ट्रोनिक मेल संचार के लिए प्रौद्योगिकी विकास का अनूठा तोहफा है। इस संचार सेवा के जरिए हम अपने बात या चिटठी दुनिया के किसी भी कोने में पहुंचा सकते हैं, मनोरंजन के सांधन उपलब्ध करा सकते हैं, खरीददारी कर सकते हैं, फिल्म देख सकते हैं, और व्यापार में तरक्की का रास्ता निकाल सकते हैं। यहां तक कि इसका प्रयोग षिक्षा के प्रचार प्रसार में भी कर सकते हैं।

ज्यूरिक्तस नामक ई–मेल सेवा से तो कोई भी वकील छोटी अदालतों से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक की अदालतों के फैसलों को देख सकता है। ओर इसके द्वारा डॉक्टरों को नयी–नयी दवाओं और ऑपरेषन से संबंधित नयी नयी जानकारियां भी दी जा सकती हैं, इस सेवा की सबसे बड़ी खासियत इसका सस्ता होना है। ऑप्टिकल फाइबर संचार क्रांति के लिए मिसाल के रूप में सामने आ चुका है, जो प्रौद्योगिकी विकास का ही परिणाम है। इसमें तकनीक की मदद से संचालित ध्वनि, आंकड़े, चित्र, टेक्स्ट, कोएक्सिल केबल या लाइन ऑफ साइट पाथ को बदलना संभव हो सकता है। वर्त्तमान संचार प्रणालियों में करीब 70 प्रतिषत ऑप्टिकल फाइबर्स पर ही आधारित होते हैं, यह एक ऐसी प्रविधि है जिसकी मदद से संचरण बाल की तरह पतले तथा मुड़ने वाले तंतुओं से होता है। यह तंतु पारदर्षी कांच या प्लास्टिक के बने होते हैं, जिनके द्वारा सूचनाओं का आदान प्रदान प्रकाष के पूर्ण आंतरिक परावर्तन से होता है।

साइबर स्पेस प्रौद्योगिकी विकास का अति सषक्त हथियार है, जिसकी धार की तीव्रता को संचार क्रांति में आयी गुणोतर वृद्धि से आंका जा सकता है, इसका प्रयोग सर्वप्रथम विलियम

गिब्सन ने अपनी कल्प कथा बर्निंग क्रोम में किया था, वास्तव में यह प्रौद्योगिकी विकास का वह तोहफा है जो मस्तिश्क के अर्द्ध लोकोतर स्तर के बहुत करीब है। प्रौद्योगिकी विकास की एक अन्य देन मल्टीमिडिया संचार क्रांति के लिए लंबी छलांग साबित हो रहा है। इस प्रौद्योगिकी की विषेशता है कि इसके प्रयोग से टेक्स्ट, डाटा ग्राफिक्स, एनिमेषन, ऑडियो एवं वीडियो डिजिटल के रूप में डिलीवर किया जा सकता है। एक मल्टीमिडिया सिस्टम, कम्प्यूटर की तरह ही सभी प्रकार की सूचनाओं की रिकार्डिंग, प्रोसेसिंग, एकत्रीकरण एवं डिलीवरी बाइनरी कोड करता है।

इस प्रौद्योगिकी विकास के कारण संचार जगत में जो युगांतकारी बदलाव आये उनका सीधा संबंध अंतरिक्ष में उपग्रहों के प्रक्षेपण से भी है, उपग्रहों के कारण वायु तरंग पर बैठकर न सिर्फ ध्वनि बल्कि चित्र भी पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक पलक झपकते ही पहुंच जाते हैं। इस प्रगति ने संचार को आकाषीय बना दिया है, चुंकी सूचना ही षक्ति है इसलिए जिसके पास त्वरित सूचना प्राप्त करने के साधन हैं वह सूचना युग में सबसे अधिक षक्तिषाली है, यह त्वरित सूचना अंतरिक्ष उपग्रहों के माध्यम से संभव हो सकी है। समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन से षुरू हुआ प्रौद्योगिकी विकास का सिलसिला बेतार के तार, सेल्यूलर फोन, इंटरनेट से गुजरते हुए सैटेलाइट युग में प्रवेष कर चुका है। प्रौद्योगिकी विकास जो संचार क्रांति की धार को तीव्र कर रहा है, के अंतिम मिषन का अंदाजा भी लगा पाना नामुमकिन हैं, फिर भी यदि प्रौद्योगिकी का उपयोग साधक के रूप में होता रहे तो यह सम्पूर्ण समाज के विकास के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा।

ग्रामीण पिछड़ी जाति छात्र–छात्रायें मोबाईल फोन का व्यापक स्तर पर प्रयोग कर रहे हैं, जिसके कारण उनके सामाजिक सम्पक्र का दायरा विस्तृत हो चला है, उनके बीच संचार क्रांति ने युगान्तकारी सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों को अंजाम दिया है। जिसके कारण इनके

जीवनशैली में वैश्वीकता का समावेश होने लगा है। भूण्मडलीकरण के प्रभाव के कारण शहरी पिछड़ी जाति आबादी व्यापारिक क्रियाकलापों की ओर पहले से ज्यादा उन्मुख हो चली है।

नकारात्मक प्रभाव

भूण्मडलीकरण के कारण सूचना क्रांति का दुष्प्रभाव कुरमी/महतो महिलाओं व उनके परिवार पर भी पड़ा है। अन्तर पिछड़ी जाति अथवा अंतधार्मिक विवाह के कारण जो परिवार का निर्माण हो रहा है, उसकी स्वीकृति पिछड़ी जाति समाजों द्वारा नहीं मिलती है, ऐसी स्थिति में अंतरपिछड़ी जाति तथा अंतर–सामुदायिक विवाह के फलस्वरूप बनने वाले परिवार अलग–अलग पड़ते जा रहे हैं। भूण्मडलीकरण तथा शहरीकरण के फलस्वरूप पिछड़ी जाति पिछड़ी समाजों में यौन अपराध की घटनाओं में वृद्धि हो रही है। ग्रामीण क्षेत्रों से शहर में दैनिक मजदूरी के रूप में काम करने के लिए अधिक संख्या में ठेकेदारों द्वारा महिलाओं का यौन शोषण किया जाता है।

जन्म दर को नियंत्रित करने वाले साधन जैसे– गर्भ निरोधक गोली का सेवन तथा कंडोम का प्रयोग यौन शोषण तथा यौन अपराध की घटनाओं में वृद्धि के लिए जिम्मेदार है। भूण्मडलीकरण तथा शहरीकरण का प्रभाव के कारण पिछड़ी जाति समाजों में बाल अपराध में वृद्धि हुई है। काम की खोज में बाल श्रमिक के रूप में काम घरों, होटलों, गैरेजों, लघु उद्योगों आदि में मिलता है, लेकिन कुछ बच्चे चीजों की प्राप्ति हेतु अनैतिक साधनों का प्रयोग में लाते हैं। वे गिरोह बनाकर चोरी डकैती, राहजनी, रंगदारी, गुंडागर्दी आदि करने लगते हैं। भूण्मडलीकरण ने विश्व बैंक व अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के सहयोग से बंधुआ मजदूरी की नई परंपरा स्थापित की है। यह मजदूर समाज में होने वाले उतार चढ़ाव से ही संबंधित न होकर समाज में असमानता पैदा कर रहे हैं, बल्कि विश्व व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की झोली भरने की कार्य किया है।

यद्यपि भूण्मडलीकरण ने ग्रामीण क्षेत्रों और अन्य विकासशील क्षेत्रों में कार्य के अवसर उपलबध कराये हैं जहाँ कोई रोजगार नहीं था, परन्तु ये उतने ही हैं जिस प्रकार भेड़ से उन निकाला जाता है। महिलाओं के लिए जो कार्य उपलब्ध हुए हैं वे कम मजदूरी वाले मानसिक व शारीरिक कठिनाई वाले और असुरक्षित हैं।

आज दूरदर्शन का दूरगामी प्रभाव मानव जीवन पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में पड़ा है। अतः स्वभाविक है कि पिछड़ी जाति समाज भी इस प्रभाव से अछुता नहीं है। 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सकारात्मक में जवाब दिया है, वहीं 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नकारात्मक रूप से स्वीकार किया है और 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभावों को स्वीकार किया है। अतः हम कह सकते हैं कि भूण्मडलीकरण के दौर में दूदरर्शन का सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव को मानने वालों का प्रतिशत सबसे अधिक है। जनसंचार माध्यमों के कारण सामाजिक–आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्थाओं आदि का विकास हुआ है। विकास के अनेक कार्यक्रम तथा योजना का क्रियान्वयन किस तरह हो रहा है इसकी जानकारी भी जनसंचार माध्यमों से ही होती है। इस ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में जनसंचार माध्यम भी सहायक सिद्ध हुए हैं।

इसकी जानकारी हमने अध्ययन क्षेत्रों से ली अतः 45 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाँ में जवाब दिया है और 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में जवाब दिया है। अतः हम कह सकते हैं कि ग्रामीण विकास कार्यक्रमों की जानकारी के प्रति चेतना कुछ उत्तरदाताओं में है, किन्तु कुछ उत्तरदाताओं को अशिक्षा के कारण जानकारी नहीं होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में वैश्विक दृष्टिकोण की भावना का विकास से संबंधी जानकारी में उत्तरदाताओं ने 25 प्रतिशत हाँ में जवाब दिया है और 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने वैश्विक दृष्टिकोण की भावना का विकास नहीं हुआ है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी वैश्विक दृष्टिकोण की भावना का विकास नहीं हुआ है।

पारम्परिक दृष्टिकोण का तात्पर्य समाज में प्रचलित परम्पराओं के पालन से है। जनसंचार क्रांति के कारण मनोवृत्ति में परिवर्तन वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जन्म देता है, फलस्वरूप पारम्परिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आ ही जाता है। पारम्परिक दृष्टिकोण एवं व्यवहार में परिवर्तन 65 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि पारम्परिक दृष्टिकोण एवं व्यवहार में परिवर्तन नहीं आया है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि जनसंचार माध्यम के प्रभाव के फलस्वरूप पारम्परिक दृष्टिकोण एवं व्यवहार में अनुकूलनशील परिवर्तन आया है जो भूण्मडलीकरण को दर्शाता है। मनोरंजन के लिए टेलीविजन एक माध्यम होता है और 85 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने टेलीविजन देखना पसंद करते हैं और 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं को टेलीविजन देखने में रूचि नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी व्यवस्थित जीवन जीने के बाद भी शाम को टी.वी. देखना पसंद करते हैं। अतः ग्रामीण क्षेत्रों के घरों में भी टेलीविजन ने जगह बना ली है। टी.वी. के चैनलों द्वारा प्रसारित कार्यक्रम को पसन्द करने वाले उत्तरदाताओं ने अपने–अपने पसंद को व्यक्त किये हैं। 20 प्रतिशत उत्तरदाता समाचार देखना पसंद करते हैं, 25 प्रतिशत उत्तरदाता धारावाहिक देखना पसंद करते हैं, 30 प्रतिशत उत्तरदाता फिल्म देखना पसंद करते हैं, वहीं 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ज्ञान–विज्ञान कार्यक्रम देखना पसंद करते हैं। इससे दर्शकों की रूचियों और मनोवृतियों का पता चलता है जो भूण्मडलीकरण का ही द्योतक है। भूण्मडलीकरण का प्रभाव किसानों पर भी व्यापक तौर पर पड़ा है और वे भी आधुनिक समाज के संपक्र में रहना चाहते हैं। क्योंकि तकनीकी व वैज्ञानिक युग में जो भी व्यक्ति इनका इस्तेमाल करने में पिछड़ जाता है, यही वजह है कि आज 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास मोबाईल फोन है और वहीं मात्र 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि उनके पास मोबाईल फोन नहीं है।

जनसंचार के माध्यमों में परिवर्तन के कारण भूण्मडलीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिला, जिसके कारण समय एवं स्थान की दूरी कम हो गयी है, जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक व्यवस्थाओं का आदान–प्रदान सुलभ हो पाया है, जो क्षेत्रीयता के विकास

में तो योगदान दिया ही है, साथ ही वैश्विक दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक है, जैसा कि पिछड़ी उत्तरदाताओं ने भी इस बात को स्वीकार किया है। सामाजिक– सांस्कृतिक भूण्मडलीकरण के सम्बन्ध में निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राँची नगर में पिछड़ी जाति पर भूण्मडलीकरण का प्रभाव पड़ा है। इससे सामाजिक घटनाओं की सोच–विचार, विश्वास, मनोवृत्ति आदि में परिवर्तन आया है और उनके बीच आधुनिक सोच भी विकसित हो रही है। अनेक लोग सामाजिक निषेधों, अन्याय, अत्याचार के विरोध में खड़े हो रहे हैं।

परम्परागत विश्वासों और प्रचलित अंधविश्वास यथा भूत–प्रेत, डायन, ओझा और आत्मा आदि पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना कर लोग इसे नकार रहे हैं। साथ ही परम्परागत और आधुनिक साधनों का प्रयोग संस्कार सम्पन्नता मनोरंजन सामाजिक– सांस्कृतिक उत्सवों, धार्मिक आयोजनों एवं त्योहारों में करने लगे हैं। इससे यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि राँची नगर के पिछड़ी जातियों एवं उन समाज की महिलाओं पर भूण्मडलीकरण का प्रभाव पड़ा है।

सेटेलाइट चैनलों के प्रयोग से संबंधित सारणी

तथ्य	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
डिश टीवी	26	13
एयरटेल	74	37
डिटि एच	30	15
कुछ नहीं	70	35
कुल योग	**200**	**100**

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि यह सेटेलाइट चैनलों के प्रयोग से संबंधित है अधिकांश उत्तरदाताओं के द्वारा सेटेलाइट चैनलों का प्रयोग किया जाता है, परंतु इनका प्रयोग नहीं करने वालों की संख्या भी काफी है, जिसके अंतर्गत 70 उत्तरदाता आते है, और इनका प्रतिशत 35 है, इसके अलावे अन्य सेटेलाइट चैनलों का

प्रयोग करने वालों के अंतर्गत डिश टीवी का प्रयोग 13 प्रतिशत, एयरटेल का प्रयोग 37 प्रतिशत और डिटी एच का प्रयोग करने वालों की संख्या 15 प्रतिशत है।

पिछड़ी जाति परिवार की जरूरतें पूरी होने से संबंधित सारणी

जरूरतों की प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
25 प्रतिशत से कम	82	41
25–50 प्रतिशत	91	45.5
50–75 प्रतिशत	21	10.5
100 प्रतिशत	6	3
कुल योग	**200**	**100**

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि यह पिछड़ी जाति परिवार की जरूरतें पूरी होने से संबंधित है वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जहां समाज में नई आर्थिक व्यवस्था स्थापित हो रही है वहीं दूसरी ओर इससे पिछड़ी जाति पारिवारिक आवश्यकताओं को पूरा कर पाना संभव नहीं हो पाता है, मात्र 3 प्रतिशत ही पिछड़ी जाति परिवार ऐसे हैं जो अपनी संपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाते हैं, जबकि 41 प्रतिशत लोगों की 25 प्रतिशत से कम आवश्यकताओं की ही पूर्ति पा रही है, और 25–50 प्रतिशत की आवश्यकता 45.5 प्रतिशत लोग पूरा कर पा रहे है, 50.75 प्रतिशत 10.5 प्रतिशत लोग पूरा कर पा रहे हैं।

सुझाव

1. कुरमी/महतो समाज में खासकर महिलओं को संचार के सशक्त माध्यम से जोडकर ही उनका सर्वांगिण विकास किया जा सकता है।

2. जनसंचार माध्यमों के जरिये दूरदर्शन, फिल्म, टेलीफोन, मोबाईल फोन, इंटरनेट और ई–मेल जैसे सुविधाओं को बढ़ावा देना होगा। साथ ही इन माध्यमों द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों के निर्माण पर ध्यान देना होगा ताकि उनका नकारात्मक प्रभाव कम पड़े और

राष्ट्रीय भावना का विकास हो सके। साथ ही सामाजिक–आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक विकास भी संभव हो सके।

3. उनमें जागरुकता लाने के लिए रेडियो व मोबाईल फोन एक सशक्त माध्यम बन सकता है।

4. शिक्षा का पर्याप्त विकास के साथ ही कुरमी/महतो समाज में जागरूकता आएगी एवं इसके लिए सरकारी और गैर सरकारी दोनों स्तर पर प्रयास तीव्र करना होगा।

5. महिलाएँ तभी प्रगति और विकास कर सकती हैं, जबकि वे शिक्षित हों। शोध के दौरान यह पाया गया कि पिछड़ी जाति महिलाओं में शिक्षा का स्तर निम्न है।

6. उनके समाज में व्याप्त कुरीतियाँ यथा बाल विवाह, डायन प्रथा आदि का उन्मूलन होना चाहिए। इसके लिए उनके बीच जागरूकता पैदा करनी होगी।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1 बेसरा, बासुदेव, 1973, ए प्रोग्राम फोर रिसर्च ऑन मैनेजमेंट इनफॉरमेंषन सिस्टम, मैनेजमेंट साइंस।

2 क्रिसमैन रिजले, 1996, अंडरस्टैंडिंग डेवलपमेंट, लाइन रियेनर, बाउल्डर।

3 बेजामीन डिजराइली, 1986, ए स्टडीज इन ग्लोबलाइजेषनः इंटरनल एण्ड इंटरनेषनल माइग्रेसन इन इंडिया, दिल्ली मनोहर पब्लिकेसन।

4 अंगूरा सैम्यूअल, 1979, द रेषनल पीजेंट, यूनीवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, बर्केले,

5 बेलोज सी डेविस, 1962, टूआर्डस ए थियरी ऑफ रिवोल्यूषन, अमेरिकन सोसियोलॉजिकल रिव्यू, येल यूनिवर्सिटी प्रेस, येल।